चार मूल नियम

लेखक

अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब

-रहिमहुल्लाह-

चार मूल नियम

लेखकः अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब -रहिमहुल्लाह-

شركاء التنفيذ:

دار الإسلام جمعية الربوة رواد الترجمة المحتوى الإسلامي

يتاح طباعة هذا الإصدار ونشره بأي وسيلة مع الالتزام بالإشارة إلى المصدر وعدم التغيير في النص.

Telephone: +966114454900

ceo@rabwah.sa

P.O.BOX: 29465

RIYADH: 11557

www.islamhouse.com

चार मूल नियम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ), जो बड़ा दयालु एवं बेहद दयावान है।)

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ, जो करीम (अर्थात : सबसे अधिक सम्मान वाला एवं सम्मान प्रदान करने वाला, तथा सबसे ज़्यादा भलाई और बख्शिश करने वाला) और महान अर्श का रब है, कि दुनिया तथा आखिरत में आपका संरक्षण करे।

और आप जहाँ भी रहें आपको मुबारक बनाए, और आपको उन लोगों में शामिल कर दे, जो कुछ प्राप्त होने पर शुक्र अदा करते हैं, जब उन्हें किसी परीक्षा में डाला जाए तो वे धैर्य रखते हैं, और पाप करने पर क्षमा मांगते हैं। क्योंकि ये तीनों गुण सौभाग्य के सूचक हैं।

जान लें! -अल्लाह आपका अपने आज्ञापालन की ओर मार्गदर्शन करे-, कि हनीफ़ीयत यानी इबराहीम -अलैहिस्सलाम- के धर्म का अर्थ यह है : कि आप धर्म को अल्लाह के लिए विशुद्ध करते हुए केवल उसी की इबादत

करें, जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान है : ﴾ और मैंने जिन्नों तथा मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें। ﴿[अज़-ज़ारियात : 56]। जब आपने यह जान लिया कि अल्लाह ने आपको अपनी इबादत के लिए पैदा किया है, तो यह भी जान लें कि कोई भी इबादत उसी समय इबादत कहलाएगी, जब वह तौहीद से सुसज्जित हो। बिलकुल वैसे ही, जैसे नमाज़ उसी समय नमाज़ कहलाएगी, जब वह तहारत (पवित्रता) के साथ अदा की जाए। अतः, यदि शिर्क इबादत में प्रवेश कर जाए, तो इबादत भ्रष्ट हो जाती है, जैसे कि तहारत में हदस (अपवित्रता की अवस्था) प्रवेश करने से तहारत नष्ट हो जाती है। फिर जब आपने यह जान लिया कि शिर्क जब किसी इबादत के साथ मिश्रित हो जाता है तो उस इबादत को भ्रष्ट कर देता है एवं अन्य सभी कार्यो को भी नष्ट कर देता है तथा इस शिर्क का करने वाला नरक में सदैव रहने का हक़दार बन जाता है- तो आप यह भी जान लें कि आपकी सबसे पहली ज़िम्मेवारी होती है शिर्क की पहचान करना, शायद अल्लाह आपको शिर्क के जाल से बचा ले, जिसके बारे में अल्लाह तआला का फरमान है : ﴾ निःसंदेह अल्लाह अपने साथ साझी ठहराए जाने को क्षमा नहीं करेगा और इससे कमतर पाप जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा। ﴿[अन-निसा : 116]। और

शिर्क को जानने के लिए ज़रूरी है कि आप चार नियमों से अवगत हो जाएँ, जिन्हें अल्लाह तआला ने अपनी किताब मे ज़िक्र किया है :

प्रथम नियमः

आप यह जान लें कि वे काफ़िर, जिनसे अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने युद्ध किया था, निःसंदेह इस बात को मानते थे कि अल्लाह ही (संसार का) सृष्टा और संचालक है, परंतु इस इक़रार ने उन्हें इस्लाम में प्रवेश नहीं कराया। इस बात का प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴾(ऐ नबी! इन मुश्रिकों से) कहें : वह कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती से जीविका देता है? या फिर कान और आँख का मालिक कौन है? और कौन जीवित को मृत से निकालता और मृत को जीवित से निकालता है? और कौन है जो हर काम का प्रबंधन करता है? तो वे ज़रूर कहेंगे : "अल्लाह", कहो : फिर क्या तुम डरते नहीं? ﴿[यूनुस : 31]।

दूसरा नियम :

अरब के काफ़िर कहते थे कि हमारा अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों को पुकारने और उनके प्रति आकर्षित होने का उद्देश्य केवल यह है कि हमें अल्लाह की निकटता और उसके यहाँ सिफ़ारिश प्राप्त हो जाए। निकटता वाली बात का प्रमाण अल्लाह का यह फरमान है : ﴾तथा जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा अन्य संरक्षक बना रखे हैं (वे कहते हैं कि) हम उनकी पूजा केवल इसलिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह से क़रीब कर दें। निश्चय अल्लाह उनके बीच उसके बारे में निर्णय करेगा, जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं। निःसंदेह अल्लाह उसे मार्गदर्शन नहीं करता, जो झूठा, बड़ा नाशुक्रा हो। ﴿[अज़-ज़ुमर : 3]। और इस बात का प्रमाण कि वे सिफारिश पाने की उम्मीद में शिर्क करते थे, अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴾और वे लोग अल्लाह को छोड़कर उनको पूजते हैं, जो न उन्हें कोई हानि पहुँचाते हैं और न उन्हें कोई लाभ पहुँचाते हैं और कहते हैं कि ये लोग अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं। ﴿ [यूनुस : 18]।

वास्तव में सिफ़ारिश दो प्रकार की होती है : एक वह सिफ़ारिश जिस का शरीयत में इनकार किया गया है और दूसरी वह जिसको शरीयत में साबित किया गया है।

अमान्य सिफारिश : इससे अभिप्राय वह सिफ़ारिश है, जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से उस वस्तु के संबंध में तलब की जाए जिसकी क्षमता अल्लाह के सिवा किसी के पास न हो। और इसकी दलील अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴿ऐ ईमान वालो! उसमें से ख़र्च करो, जो हमने तुम्हें दिया है, इससे पहले कि वह दिन आ जाए, जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा और न कोई दोस्ती और न कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश)। तथा काफ़िर लोग ही अत्याचारी हैं। ﴾[अल-बक़रा : 254]।

मान्य सिफारिश : इससे अभिप्राय वह सिफ़ारिश है, जो अल्लाह से तलब की जाए, इस सिफारिश के द्वारा सिफारिश कर्ता को अल्लाह की ओर से सम्मानित किया जाता है, तथा वह व्यक्ति जिसके लिए सिफारिश की जा रही है, केवल वही हो सकता है जिसके कथन तथा कर्म से अल्लाह प्रसन्न हो एवं जिसके लिए सिफारिश की अनुमति दे, जैसा कि अल्लाह तआला का

फरमान है : ﴾उसकी अनुमति के बिना कौन उसके पास सिफारिश कर सकता है? ﴿[अल-बक़रा : 255]।

तीसरा नियम :

नबी - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - ऐसे लोगों के बीच भेजे गए थे, जो अपनी इबादतों में अलग-अलग तरीक़ों पर थे। कोई फ़रिश्तों की इबादत करता था, कोई नबियों तथा अल्लाह के सदाचारी बंदों की इबादत करता था, कोई पेड़ों और पत्थरों की इबादत करता था और कोई सूरज तथा चाँद की इबादत करता था। अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने इन सारे लोगों से युद्ध किया और उनके बीच कोई अंतर नहीं किया। इस बात का प्रमाण, अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴾तथा उनसे युद्ध करो, यहाँ तक कि कोई फ़ितना न रह जाए और धर्म पूरा का पूरा अल्लाह के लिए हो जाए। ﴿[अल-अनफ़ाल : 39]। और इस बात का प्रमाण कि सूर्य और चंद्रमा की पूजा की जाती थी, अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴾तथा उसकी निशानियों में से रात और दिन तथा सूरज और चाँद हैं। तुम न तो सूरज को सजदा करो और न चाँद को, और उस अल्लाह को सजदा करो, जिसने उन्हें पैदा किया

है, यदि तुम उसी (अल्लाह) की इबादत करते हो। ﴾[फ़ुस्सिलत : 37]। और इस बात का प्रमाण कि फ़रिश्तों की पूजा की जाती थी, अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴿तथा (यह नहीं हो सकता कि) वह तुम्हें आदेश दे कि फ़रिश्तों तथा नबियों को अपना रब बना लो... ﴾ [आल-इमरान : 80]। और इस बात का प्रमाण कि नबियों की पूजा की जाती थी, अल्लाह तआला का यह फ़रमान है : ﴿तथा जब अल्लाह (क़ियामत के दिन) कहेगा : ऐ मरयम के पुत्र ईसा! क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे तथा मेरी माँ को अल्लाह के अलावा दो पूज्य बना लो? वह कहेगा : तू पवित्र है, मुझसे यह कैसे हो सकता है कि ऐसी बात कहूँ, जिसका मुझे कोई अधिकार नहीं? यदि मैंने यह बात कही थी, तो निश्चय तूने उसे जान लिया। तू जानता है, जो मेरे मन में है और मैं नहीं जानता जो तेरे मन में है। निश्चय तू ही सब छिपी बातों (परोक्ष) को बहुत ख़ूब जानने वाला है। ﴾[अल-माईदा : 116]।

और इस बात का प्रमाण कि सदाचारी बंदों की पूजा की जाती थी, अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴿जिन्हें ये (मुश्रिक) लोग पुकारते हैं, वे स्वयं अपने पालनहार की निकटता का साधन तलाश करते हैं कि उनमें से कौन (अल्लाह से) सबसे अधिक निकट हो जाए, तथा उसकी दया की आशा

रखते हैं और उसकी यातना से डरते हैं। निःसंदेह आपके पालनहार की यातना डरने की चीज़ है। ﴾[अल-इसरा : 57]। और इस बात का प्रमाण कि पेड़ों तथा पत्थरों की पूजा की जाती थी, अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴿फिर क्या तुमने लात और उज़्ज़ा को देखा।। तथा तीसरी एक और (मूर्ति) मनात को? ﴾[अन-नज्म : 19, 20]|

अबू वाक़िद लैसी -रज़ियल्लाहु अन्हु- की हदीस भी इस विषय का प्रमाण है, जिस में वह फ़रमाते हैं कि : "हम नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के साथ हुनैन की ओर निकले। उस समय हम नए-नए मुसलमान हुए थे। उन दिनों मुश्रिकों का एक बेरी का पेड़ हुआ करता था, जिसके पास वे डेरा डाला करते थे तथा जिस पर अपने हथियार लटकाया करते थे। उस पेड़ का नाम "ज़ात अनवात" था। हम भी एक बेरी के पेड़ के पास से गुज़रे, तो हमने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! जैसे मुश्रिकों के पास "ज़ात अनवात" है, हमारे लिए भी एक "ज़ात अनवात" नियुक्त कर दें..."।

चौथा नियमः

हमारे ज़माने के मुश्रिक, अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के ज़माने के शिर्क करने वालों की तुलने में शिर्क की दलदल में

अधिक फँसे हुए हैं। क्योंकि उस ज़ामने के मुश्रिक खुशहाली के समय तो शिर्क करते थे, लेकिन कठिनाई के समय केवल अल्लाह को पुकारते थे। जबकि हमारे समय के मुश्रिक सुख और संकट दोनों अवस्थाओं में शिर्क करते हैं। इस बात का प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है : ﴿फिर जब वे नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह को, उसके लिए धर्म को विशुद्ध करते हुए, पुकारते हैं। फिर जब वह उन्हें बचाकर थल तक ले आता है, तो शिर्क करने लगते हैं।﴾ [अल-अंकबूत : 65]।

और अल्लाह तआला ही सबसे ज़्यादा और बेहतर जानता है। तथा अल्लाह की कृपा और शांति (दुरूद व सलाम) हो (हमारे नबी) मुहम्मद पर और आपके समस्त परिजनों एवं सभी सहाबा (साथियों) पर।

विषय सूची

चार मूल नियम 3
प्रथम नियमः 5
दूसरा नियम : 6
तीसरा नियमः 8
चौथा नियम : 10
विषय सूची 12